शेर और लोमड़ी की कहानी

By - storiesforkidsbedtime.com

एक जंगल में एक खूंखार शेर रहता था। वह शेर बहुत ही खतरनाक था जिससे जंगल के सारे जानवर डरा करते थे। शेर अपनी भूक मिटने के लिए जंगल के जानवरों का शिकार करता और उन्हें खा जाता। शेर को ज़ोरों की भूक लगी थी। वह शिकार करने के लिए जंगल में घूमने लगा।
वह बहुत देर तक जंगल में घूमता रहा लेकिन उसे एक भी जानवर दिखाई नहीं दिया। वह भूख के मारे पागल हो रहा था।

बहुत देर तक चलने के बाद शेर एक गुफा के पास जा पंहुचा। गुफा के पास पहुंचते ही उसने सोचा, "यहाँ पक्का कोई जानवर रहता है। मैं उसका शिकार करूँगा और उसे खा जाऊंगा। " शेर धीरे-धीरे गुफा के अंदर गया। गुफा के अंदर जाकर उसने देखा की वहां कोई नहीं था। वह गुफा खली था। लेकिन शेर को वहां दूसरे जानवर की ताज़ा महक आ रही थी जिससे वह समझ गया की यहाँ पक्का एक जानवर रहता है। ऐसे में शेर वहां छुपकर अपने शिकार का इंतज़ार करने लगा।

कुछ देर बाद एक लोमड़ी वहां आई। लोमड़ी जब अपने गुफा के नज़दीक पहुंची तो उसने देखा की गुफा के अंदर की और शेर के पैरों के निशान है। ऐसे में लोमड़ी बहुत डर गई और वह सोचने लगी की अंदर जाऊ या नहीं जाऊ? लोमड़ी ने खुदको शांत किया और अपने दिमाग का इस्तेमाल करने लगी। बारीकी से देखने के बाद पता चला की शेर के पैरों के निशान अंदर की ओरे जा रहे है लेकिन वापस नहीं आ रहे। ऐसे में लोमड़ी समझ गई की शेर अंदर है।

Read more

लोमड़ी अपने निर्णय की पुष्टि करने के लिए एक और तरकीब सोचने लगी। लोमड़ी बोली, मेरी गुफा मैं आ गई। क्या तुम मेरा स्वागत नहीं करोगी ?" लोमड़ी के ऐसे कहने पर शेर चुपचाप अंदर सुन रहा था।

लोमड़ी ने फिर आवाज़ लगाया, "मेरी प्यारी गुफा क्या कोई परेशानी है? आज तुम मेरा स्वागत नहीं कर रही।" यह सुनकर शेर सोचा की उसे चुप नहीं बैठना चाहिए नहीं तो लोमड़ी भाग जाएगी। शेर ने कहा, "नहीं नहीं! सबकुछ ठीक है। तुम्हारा स्वागत है अंदर आओ। " अब लोमड़ी पाके तौर पर जान चुकी थी की शेर अंदर ही है। ऐसे में वह जितनी जल्दी हो सके वहां से भाग गई और अपनी जान बचा ली। दूसरी तरफ शेर वही भूखा अंदर इंतज़ार करते-करते मर गया।

मोरल ऑफ़ द स्टोरी : हमें हमेशा धंदे दिमाग से काम करना चाहिए। अगर हम किसी मुसीबत में हो तो सबसे पहले हमें अपना दिमाग शांत करना चाहिए फिर कोई निर्णय लेना चाहिए इससे गलतियाँ होने की सम्भावना कम हो जाती है।